आधुनिकीकरण की अवधारणा एवं भारतीय समाज

डॉ. राखी वंशकार
सहायक प्राध्यापक, राजनीति शास्त्र विभाग
शासकीय स्नातक महाविद्यालय भुआ बिछिया
जिला- मंडला (म. प्र.)

सारांश

वर्तमान युग तकनीकी युग है। आज प्रत्येक क्षेत्र में तकनीकी विकास दिन प्रतिदिन होते ही जा रहे हैं। यह आधुनिकीकरण का ही परिणाम है। आज ग्रामीण हो या शहरी हर क्षेत्र में जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं में परिवर्तन आया है। पहले मानव जीवन की 3 मूलभूत आवश्यकताएं थी रोटी, कपड़ा और मकान। किंतु वर्तमान में इनके अतिरिक्त स्वास्थ्य, शिक्षा, तकनीकी विकास, बिजली, मोबाइल, इंटरनेट आदि भी हमारी मूलभूत आवश्यकता में शामिल हो चुके हैं। यह सभी परिवर्तन आधुनिकीकरण एवं पश्चिमीकरण के प्रभाव के कारण हुए हैं। आज हमारे खान पान, रहन सहन, आचार विचार, पहनावा यहां तक कि संचार माध्यमों एवं पत्रकारिता आदि पर भी आधुनिकीकरण का प्रभाव दिखाई दे रहा हैं।

प्रस्तावना

परिवर्तन प्रकृति का नियम है । प्राचीनकाल से लेकर वर्तमान युग तक मानव जीवन में बहुत परिवर्तन हुए हैं और परिवर्तन एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। मानव जीवन के विभिन्न आयामों में हम विभिन्न परिवर्तनों को देख सकते हैं। सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, व्यक्तिक, सांस्कृतिक, धार्मिक इन सभी आयामों में प्राचीन काल अर्थात भूतकाल में किस प्रकार व्यवस्था थी और आज वर्तमान में उसका स्वरूप कैसा है और भविष्य में इसका स्वरूप कैसा होगा इस गतिशीलता को परिवर्तन कहते हैं। इन परिवर्तनों के पीछे कई कारण होते हैं। आधुनिकीकरण का प्रत्यक्ष संबंध आधुनिकता से है । यह एक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति और सामाजिक जीवन में आधुनिकता का प्रतिपादन किया जाता है। **डॉ श्यामाचरण दुबे** के अनुसार **"आधुनिकीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जो परंपरागत समाज से प्रौद्योगिकी पर आधारित समाज की ओर अग्रसर होती है ।"** यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि आधुनिकता विज्ञान तर्क और प्रगति में विश्वास रखने पर बल देती है आधुनिकता परंपरागत समाज से विच्छेद का प्रतिनिधित्व करता है। आधुनिकीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें एक समाज दूसरे समाज की संस्कृति, सभ्यता, खानपान, रहन सहन, आचार विचार, पहनावा एवं तकनीकी को आत्मसात कर लेता है। **एडिजा बजास** के अनुसार **"आधुनिकीकरण आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, तथा सांस्कृतिक क्षेत्र में विविध अंतरसंबंधित परिवर्तनों की एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से कम विकसित समाज अधिक विकसित समाजों की विशेषताओं को प्राप्त कर लेते हैं।"** आधुनिकीकरण एक समाज विशेष के सदस्यों के जीवन को प्रभावित करने वाली एक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति के सभी आयाम सामाजिक आर्थिक राजनीतिक सांस्कृतिक में ऐसे अंतर संबंधित परिवर्तन होते हैं जो उसे अन्य विकसित समाजों के समकक्ष स्थापित करने में सहायक सिद्ध होते हैं । वर्तमान संदर्भ में मोबाइल, सोशल मीडिया, इंटरनेट चैटिंग, फास्ट फूड आदि भी आधुनिकीकरण की श्रेणी में आते हैं।

आधुनिकीकरण एवं भारतीय समाज

भारत में या भारतीय समाज में भी आधुनिकीकरण की प्रक्रिया क्रियाशील है। आधुनिकीकरण की प्रक्रिया भारत के नगरीय एवं ग्रामीण दोनों समुदायों में ही स्पष्ट रूप से क्रियाशील है। आधुनिकीकरण की प्रक्रिया आज भारतीय ग्रामीण समुदाय में भी क्रियाशील है। इसका कारण भी स्पष्ट है कि भारत में बड़े बड़े उद्योगों व मिलो, कारखानो आदि की स्थापना हो गई है जहां पर आधुनिक मशीनों व तकनीकों की सहायता से उत्पादन कार्य होता है। गांवों में सिंचाई के नवीन साधनों का प्रयोग किया जाने लगा है। अच्छे बीजों एवं वैज्ञानिक खाद, वैज्ञानिक तकनीकों, मशीनों आदि का उपयोग किया जा रहा है। इस प्रकार भारत के नगरों एवं ग्रामों में भी

आधुनिकीकरण का प्रभाव देखा जा सकता है। भारत में आधुनिकीकरण के बहुत से कारक हैं जैसे औद्योगिकरण, नगरीकरण, पश्चिमीकरण, तकनीकी विकास आधुनिक शिक्षा, लौकिकीकरण, लोकतंत्रिकरण, संस्कृतिकरण आदि।

आधुनिकीकरण की विशेषताएं

1. सामाजिक गतिशीलता - गतिशीलता और आधुनिकीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जो एक दूसरे से अंतर संबंधित हैं। बिना सामाजिक गतिशीलता के आधुनिकीकरण की कल्पना नहीं की जा सकती। गतिशीलता के कारण ही सामाजिक परिवर्तन होते हैं और जहां परिवर्तन को अपनाया जाता है वहां आधुनिकीकरण की प्रक्रिया अधिक गतिशील होती है।

2. संगठन में परिवर्तन - मानव जीवन के विभिन्न आयामों से संबंधित विभिन्न संगठन भी होते हैं। आधुनिकीकरण के कारण इन संगठनों में परिवर्तन देखा जा सकता है अर्थात यह संगठन परंपरावादी स्वरूप को त्याग कर नवीन एवं आधुनिक स्वरूप ग्रहण करते जा रहे हैं।

3. व्यापक आधुनिकता - आधुनिकीकरण के कारण ही राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक आधुनिकता के दर्शन किए जा सकते हैं । उदाहरण के लिए उदारीकरण, निजीकरण वैश्वीकरण, औद्योगिकरण, मशीनीकरण यह सब आधुनिकीकरण के आयाम हैं और इन क्षेत्रों में व्यापक आधुनिकता की निरंतरता ही आधुनिकीकरण है।

4. नवीन समाज का उदय - आधुनिकीकरण से नवीन समाजों का उदय होता है जो अत्यंत ही आधुनिक तकनीकों से लैस है। जैसे सोशल मीडिया से जुड़ा समाज, नवीनतम तकनीकों से लैस समाज। आधुनिकीकरण के चलते विभिन्न वर्गों, समूहों, संस्थाओं का जन्म होता है जिसमें ग्लोबल विलेज, ग्लोबल फैमिली आदि की अवधारणाएं महत्वपूर्ण है।

5. विभेदीकरण - विभेदीकरण आधुनिकीकरण के लिए अति आवश्यक दशा है क्योंकि यह दोनों ही एक दूसरे के पूरक हैं। विभेदीकरण से आधुनिकीकरण को गति मिलती है और आधुनिकीकरण विभेदीकरण का कारण है।

6. नवीन विचारधारा का जन्म - आधुनिकीकरण के कारण नवीन विचारधाराओं का जन्म होता है जो मानव के समस्त आयामों से संबंधित होती हैं जैसे समाजवाद, पंथनिरपेक्षता, डिजिटलाइजेशन, सुशासन, ई गवर्नेंस आदि आधुनिकीकरण के कारण जन्मी नवीन अवधारणाएं हैं।

7. पूंजीवाद, औद्योगिक एवं नगरीकरण - आधुनिकीकरण के कारण पूंजीवाद, औद्योगिकरण एवं नगरीकरण को बढ़ावा मिलता है। औद्योगिकरण एवं नगरीकरण ही आधुनिकीकरण की पहली पहचान है। जिन समाज एवं स्थानों में नगरीकरण एवं औद्योगिकरण जितना अधिक होता है वह समाज एवं स्थान उतना ही अधिक आधुनिक माना जाता है।

8. विभिन्न आयामों में परिवर्तन - आधुनिकीकरण से सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, वैश्विक, सांस्कृतिक एवं व्यक्तिगत जीवन में परिवर्तन देखने को मिलता है। इनमें से मुख्य रूप से भूमंडलीकरण या वैश्वीकरण आधुनिकीकरण की पहली आवश्यकता है और आधुनिकीकरण भूमंडलीकरण की पहली विशेषता है।

आधुनिकीकरण के कारण

1. शिक्षा - शिक्षा के बिना कोई समाज विकास नहीं कर सकता। अतः आधुनिकीकरण के लिए भी एक शिक्षित समाज की आवश्यकता होती है क्योंकि शिक्षित समाज ही रूढ़िवादी एवं परंपरा वादी विचारों से निकलकर आधुनिकता को स्वीकार करता है। शिक्षा, ज्ञान एवं विज्ञान आधुनिकीकरण के लिए नितांत आवश्यक शर्त है। **2. संचार माध्यम -** संचार माध्यमों के प्रचार-प्रसार से आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को गति मिलती है। सूचना प्रौद्योगिकी, दूरसंचार, कंप्यूटर, इंटरनेट, मोबाइल, टीवी, रेडियो, समाचार पत्र, प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया इन सभी ने आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को तीव्र गति प्रदान की है।

3. करिश्माई नेतृत्व - एक राष्ट्रीय समाज की दशा और दिशा निर्धारित करने का दायित्व एक कुशल एवं सक्षम नेतृत्व के हाथों में होता है। यदि नेतृत्व उकृष्ट होता है तो राष्ट्र और समाज अधिक विकसित होते हैं और आधुनिकीकरण का यह पहला महत्वपूर्ण कारक है। परंपरावादी एवं रूढ़ीवादी मान्यताओं को बदलने के लिए कुशल नेतृत्व अति आवश्यक होता है। तभी तो एक राष्ट्र आधुनिक विचारों एवं परिवर्तनों को आसानी से आत्मसात कर पाता है। इतिहास ऐसे कई नेतृत्व से भरा हुआ है।

4. बुद्धि वाद - बुद्धिवाद को आधुनिकीकरण का वाहक माना जाता है। बुद्धिवाद अर्थात बौद्धिक क्षमता से परिपूर्ण समाज जो तर्क के आधार पर, तथ्यों के आधार पर नवीन परिवर्तनों को स्वीकार करते हैं। जो मानव विकास के लिए एवं आधुनिकीकरण के लिए आवश्यक होते हैं। जिससे आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को गति मिलती है।

5. भौतिक परिवर्तन - परिवर्तन प्रकृति का अटूट नियम है। विशेषकर भौतिक परिवर्तन। भौतिक जगत में होने वाले परिवर्तन जैसे बिजली, दैनिक जीवन के उपभोग की जाने वाली सामग्री, गाड़ी मोटर, मेट्रो, मोबाइल, कम्प्यूटर, इंटरनेट आदि आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को तीव्र गति प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करते हैं।

6. धन का महत्व - आधुनिकीकरण के लिए सबसे महत्वपूर्ण कारक धन है क्योंकि आज धन के महत्व में निरंतर वृद्धि होती चली जा रही है और धन मानव जीवन को सुखी और समृद्ध बनाता है। धनी व्यक्ति ही भौतिक सुख सुविधाओं का उपभोग कर सकता है जिसे आधुनिकता से परिपूर्ण कहा जाता है। इस प्रकार नवीन आर्थिक उपलब्धियों एवं औद्योगिक विकास की नवीन संभावनाओं की खोज को अपनाया जाता है और आधुनिकीकरण को प्रोत्साहन मिलता है।

7. सामाजिक समस्याएं - प्रत्येक समाज में विभिन्न समस्याएं होती है, कुरीतियां होती हैं जिनमें परिवर्तन के कारण सामाजिक परंपराएं अपने उद्देश्य में असफल हो जाती हैं जिसके कारण विभिन्न समस्याएं जन्म लेती है, और जब एक समाज इन समस्याओं के समाधान हेतु विभिन्न प्रयास करता है तो उन प्रयासों से नवीन सोच-विचार, नवीन पद्धति, प्रयोग आदि का विकास होता है और यही सब आधुनिकीकरण के कारक माने जाते हैं।

8. सामाजिक संपर्क - वर्तमान समय में आवागमन, यातायात एवं संदेश वाहन के साधनों में विकास के कारण विभिन्न समाजो एवं क्षेत्रों की भौतिक दूरियां कम होती जा रही है। सामाजीकरण, पश्चिमीकरण, संस्कृतिकरण एवं सामाजिक संपर्कों के कारण विभिन्न समाजो के एक दूसरे के संपर्क में आने से आचार विचार एवं रहन-सहन में परिवर्तन आता है। एक समाज और अधिक विकसित होने के लिए दूसरे समाजों की नकल करता है जो कि आधुनिकता से परिपूर्ण होता है।

आधुनिकीकरण के परिणाम

1. आर्थिक दशा में सुधार - आधुनिकीकरण के परिणाम स्वरूप आर्थिक दशा में सुधार देखा जा सकता है। औद्योगिक विकास, रोजगार के अवसर में वृद्धि, व्यापार वाणिज्य में तकनीकों का प्रयोग, आर्थिक उत्पादन में वृद्धि आदि आधुनिकीकरण के परिणाम स्वरूप सामने आते हैं तथा राष्ट्र के प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि देखी जा सकती है।

2. कृषि तथा ग्राम उद्योग में उन्नति - आधुनिकीकरण का प्रभाव न केवल शहरी क्षेत्रों में होता है, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में भी इसका प्रभाव देखा जा सकता है। आज भारत के गांवों में आधुनिक तकनीक से खेती की जाने लगी है ग्राम उद्योगों में, कुटीर उद्योगों में नवीन उपकरणों, मशीनों, तकनीकी आदि का प्रयोग किया जाने लगा है जिससे उत्पादन का स्तर ऊपर उठा है और निर्धनता एवं बेरोजगारी की समस्या को भी हल करने में सहायता मिलती है।

3. आधुनिक ज्ञान व विज्ञान की दुनिया से संपर्क - आधुनिकीकरण के कारण ही एक समाज प्राचीन परंपरावादी मान्यताओं से बाहर निकलकर आधुनिक ज्ञान और विज्ञान की दुनिया से सीधे संपर्क में आता है जहां मूल्यों के साथ तथ्य एवं तार्किक ज्ञान से विकास के नवीन द्वार खुलते हैं मानव के सोचने समझने का दायरा विस्तृत होता जाता है और नवीन शोध, प्रयोग, खोज को नई दिशा मिलती है।

4. अंतरराष्ट्रीय आदान-प्रदान का व्यापक क्षेत्र - आधुनिकीकरण के परिणाम स्वरूप यातायात, आवागमन एवं संचार के साधनों का विकास होता है जिसके फलस्वरूप एक समाज, एक राष्ट्र दूसरे समाज व राष्ट्र की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, तकनीकी एवं आधुनिक संस्थाओं के नियमों का आदान प्रदान करता है जो प्रत्येक के लिए लाभकारी होता है।

5. अपनी संस्कृति का निरादर - जहां उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि आधुनिकीकरण के सकारात्मक परिणाम होते हैं। किंतु आधुनिकीकरण के नकारात्मक पहलू भी है। जैसे एक समाज के नागरिक दूसरे समाज के प्रभाव में आकर अपनी संस्कृति का निरादर करने लगते हैं। पश्चिमीकरण जो की आधुनिकीकरण की ही देन है, के चलते आज पश्चिम की नकल की जा रही है। डांस क्लब, नाइट क्लब, फास्ट फूड, रीति रिवाज, परंपराएं, ड्रेसिंग सेंस सब कुछ बदल रहा है जिससे हमारी संस्कृति का अनादर हो रहा है

6. अपराध भ्रष्टाचार एवं व्यभिचार में वृद्धि - आधुनिकीकरण के परिणाम स्वरूप भ्रष्टाचार, व्यभिचार एवं अपराधों की संख्या में दिन-प्रतिदिन वृद्धि होती जा रही है । सिनेमा में जो विषय वस्तु दिखाई जाती हैं, विज्ञापनों में जो दिखाया जाता है, मीडिया के माध्यम से

जो अश्लीलता फैलाई जा रही है, जिसे मॉडर्न फैशन का नाम दिया जाता है इससे समाज में अपराध, व्यभिचार, अनैतिकता एवं भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिलता है।

निष्कर्ष

भारत में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया की अन्य देशों से पूर्णतया भिन्न है। भारतीय संस्कृति, परंपरा, सभ्यता, रीति रिवाज आज भी हमारे जीवन का अभिन्न अंग है। आधुनिकीकरण के कारण संपूर्ण भारतीय समाज दो भागों में विभक्त हो गया। एक ओर अपनी संस्कृति एवं सभ्यता को महत्व देने वाला वर्ग तथा दूसरी ओर पश्चिमीकरण एवं आधुनिकीकरण को अपनाने वाला वर्ग। इसका एक सरल उदाहरण संचार साधन के प्रयोग करने वाले वर्गों को देखकर समझ सकते हैं कि जहां एक ओर अपने धर्म एवं संस्कृति से संबंधित न्यूज़ चैनल है जो पूर्णता धर्म नैतिकता के प्रति समर्पित है तथा दूसरी ओर युवा सोच एवं आधुनिकता से परिपूर्ण सामग्री परोसने वाली न्यूज़ चैनल भी है।आज एक अलग प्रकार की संस्कृति का विकास हो रहा है जो भारतीय संस्कृति के विरुद्ध है। हमारे खान-पान, रहन-सहन, पहनावा, मनोरंजन के साधन सभी पर आधुनिकता का प्रभाव इस कदर हावी हो रहा है कि हम नैतिकता एवं मूल्यों से कहीं दूर होते चले जा रहे हैं। और विडंबना यह है कि हमें यह भी ज्ञात नहीं होता कि इस कारण हमारे समाज, संस्कृति एवं पर्यावरण को कितना नुकसान पहुंच रहा है।

निष्कर्षतः हम यह कह सकते हैं कि आधुनिकीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जो मानव के विकास से संबंधित है, समाज के विकास से संबंधित है । जो एक समाज को और अधिक विकसित, आधुनिक एवं तकनीकी साधनों से लैस बनाती है। किंतु इस तकनीकी विकास के कुछ नकारात्मक परिणाम भी सामने आए हैं। हमें आधुनिकता को अपनाना चाहिए किंतु हमें हमारे पर्यावरण, सामाजिक मूल्य, मानवीय मूल्यों को ताक पर रखकर आधुनिक नहीं बनना चाहिए। हमारी आधुनिकता का तात्पर्य हमारे आचार विचार, खान-पान, रहन-सहन में परिवर्तन होना चाहिए किंतु हमारे मूल्य अर्थात मानवीय मूल्य, सामाजिक मूल्य, व्यक्तिगत मूल्य बने रहने चाहिए। हमें वसुधैव कुटुंबकम की भावना के आधार पर अपना विकास करना चाहिए। तभी भविष्य में हम एक नैतिकता एवं मानवीय मूल्यों से परिपूर्ण समाज में जीवन यापन कर पाएंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ. डी. एस. बघेल "समकालीन भारतीय समाज एवं संस्कृति", कैलाश पुस्तक सदन भोपाल, 2010 ।
2. राम आहूजा "भारतीय समाज" रावत पब्लिकेशन जयपुर, 2000 ।
3. डॉ. रवींद्र नाथ मुखर्जी "भारतीय समाज एवं संस्कृति" विवेक प्रकाशन दिल्ली, 2014।
4. डॉ. जी.आर. मदन "परिवर्तन एवं विकास का समाजशास्त्र" विवेक प्रकाशन दिल्ली, 2012।
5. डॉ रविंद्र नाथ मुखर्जी एवं डॉ भरत अग्रवाल "सामाजिक नियंत्रण और सामाजिक परिवर्तन" विवेक प्रकाशन दिल्ली, 2015।
6. अन्य पत्र पत्रिकाएं।